५: मिठाईवाला

प्रश्नावली

<u>कहानी से</u>

प्रश्न 1. मिठाई वाला अलग – अलग चीजे क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?

प्रश्न 2. मिठाई वाले में वे कौनसे गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे , बड़े भी उसकी ओर खींचे चले आते थे?

प्रश्न 3. विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं?

प्रश्न 4. खिलौने वाले के आने पर बच्चो की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

प्रश्न 5. रोहिणी को मुरली वाले के स्वर से खिलौने वाले का स्मरण क्यों हो आया?

प्रश्न 6. किसकी बात सुनकर मिठाई वाला भावुक हो गया था? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

प्रश्न 7. 'अब इस बार पैसे न लूंगा ', कहानी के अंत में मिठाई वाले ने ऐसा क्यों कहा?

प्रश्न 8. इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है? क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती है? यदि करती है तो क्यों? आपकी राय में क्या यह सही है?

कहानी से आगे

प्रश्न 1. मिठाई वाले के परिवार के साथ क्या हुआ होगा? सोचिए और इस आधार पर एक और कहानी बनाइए?

प्रश्न 2 . हाट – मेले शादी आदि आयोजनों में कौन कौनसी चीजे आपको सबसे ज्यादा आकर्षित करती हैं? उनकी सजाने बनाने में किसका हाथ होगा? उन चेहरों के बारे में लिखिए।

प्रश्न 3. इस कहानी में मिठाई वाला दूसरो को प्यार और खुशी देकर अपना दुख कम करता है। इस मिजाज़ की और कहानियां, कविताएं ढूंढिए और पढ़िए ।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. आपकी गलियों में कई अजनबी फरी वाले आते होंगे। आप उनके बारे में क्या क्या जानते है? अगली बार जब आपकी गली में कोई आए तो उससे बातचीत कर जानने की कोशिश कीजिए।

प्रश्न 2. आपके माता पिता के जमाने से लेकर अब तक फेरी की आवाज़ों में कैसा बदलाव आया है? बड़ो से पूछकर लिखिए।

प्रश्न 3. क्या आपको लगता है कि वक्त के साथ फेरी के स्वर कम हुए हैं ? कारण लिखिए।

भाषा की बात

प्रश्न 1. मिठाई वाला, बोलनेवाली गुड़िया

- ऊपर ' वाला ' का प्रयोग है। अब बताइए कि-

(1)' वाला ' से पहले आनेवाले शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में से क्या हैं?

(2) ऊपर लिखे वाक्यांशों में उनका क्या प्रयोग है?

प्रश्न 2. " अच्छा मुझे ज्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।"

•उपर्यूर्युक्त वाक्य में ' ठो' के प्रयोग की ओर ध्यान दीजिए। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार की भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग संख्यावाची शब्द के साथ होता है, जैसे भोजपुरी में – एक ठो लाइका, चार ठे आलू, तीन ठे बटूली ।

• ऐसे शब्दों का प्रयोग भारत की कई अन्य भाषाओं/बोलियों में भी होता है। कक्षा में पता कीजिए कि किस किस की भाषा – बोली में ऐसा है। इस पर सामूहिक बातचीत कीजिए।

प्रश्न 3. " वे भी , जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं । "

" क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली? "

" दादी चुन्नू – मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। ज़रा कमरे में चलकर ठहराओ ।"

• भाषा के ये प्रयोग आजकल पढ़ने – सुनने में नहीं आते। आप ये बातें कैसे कहेंगे?

उत्तर

<u>कहानी से</u>

उत्तर 1– मिठाई वाले का स्वभाव बहुत अच्छा था। वह बच्चो से बहुत प्यार करता था तथा सभी बच्चो को खुश रखना चाहता था। बच्चों को रोज एक जैसी चीजें पसंद नहीं आती, इसलिए वह बेचने के लिए चीजें बदल बदलकर लाया करता था। तरह - तरह के सामान बनाने में उसे कम से कम एक महीने का समय लगता था इसलिए वह एक महीने बाद आता था।

उत्तर 2– मिठाई वाले में किसी को भी अपनी ओर आकर्षित करने का गुण था। वह बहुत ही मीठे स्वर में गाता था। " बच्चो को बहलाने वाला, खिलौने वाला" , ऐसे अधूरे वाक्य को विचित्र किन्तु माधक - मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले अस्थिर हो उठते। युवतियां छज्जो से निकलकर नीचे झांकने लगती। छोटे छोटे बच्चो का झुंड उसे घेर लेता तथा अपनी तोतली अवाज में कहते " मेला छिलोना " । बच्चो को खुश रखने की कोशिश में वह खिलौने बहुत सस्ते भी बेचा करता था।

उत्तर 3. विजयबाबू को मुरली वाले से मुरली खरीदनी थी इसलिए उसने मुरलीवाले को बुलाया, जब विजय बाबू ने मुरली का भाव पूछा तो मुरली वाले ने कहा कि वैसे तो वह तीन पैसे की एक मुरली बेचता है पर विजय बाबू को दो पैसे में देगा।इस पर विजय बाबू ने कहा कि तुम सभी को ही 2 पैसे में मुरली बेचते होंगे, मुझ पर प्रभाव डालने के लिए कह रहे हो कि आपको दो पैसे में दे रहा हूं। झूठ बोलकर अहसान जताना चाहते हो।अब मुरलीवाले ने अपने पक्ष में कहा कि बाबूजी आपको क्या पता कि

मुरली बनाने की लागत क्या है। उसने ये भी कहा कि मै सालों से तरह तरह की चीजे बेचता हूं, थोक में बनवाता हूं। यदि दुकानदार अपना नुकसान करके भी बेचे तब भी ग्राहक को लगता है कि वह उन्हें लूट रहा हैं। ग्राहकों को चीजों की सही कीमत अंदाज़ा नहीं होता। इस प्रकार दोनों ने अपने तर्क पेश किए।

उत्तर 4. खिलौने वाला जब भी खिलौने बेचने आता , अपनी मधुर आवाज से सभी को अस्थिर कर देता था। बच्चे " बच्चों को बहलाने वाला, खिलौने वाला " यह आवाज सुनते ही दौड़े चले आते, झुंड बनाकर खिलौने वाले को घेर लेते थे। पुलकित होकर मोलभाव करने लगते। अपनी तोतली अवाज़ में पूछते , " इछका दाम क्या है, औल इछका ? "खिलौने वाला बच्चों की नन्ही नन्ही उंगलियों से पैसे लेता तथा उन्हें उनके मनपसंद खिलौने देता। किसी बच्चे के पास पैसे न हो तो भी वह इसे खुश करने के लिए बिना पैसे भी खिलौने दे जाता।

उत्तर 5. मुरली वाला अपनी मधुर आवाज में मुरली बेचने आता था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार खिलौने वाला गाता था। जब भी मुरली वाला मुरली बेचने आता सभी उसकी मुरली की आवाज सुनकर मधहोश हो जाते। खिलौने वाले के आने पर भी सभी की यही प्रतिक्रिया होती इसलिए रोहिणी को मुरली वाले के स्वर से खिलौने वाले का स्मरण हो आया।

उत्तर 6. रोहिणी की बात सुनकर मिठाई वाला भावुक हो गया था क्योंकि उसे अपने परिवार की याद आ गई। उसने बताया कि वह अपने नगर का एक बहुत ही समृद्ध आदमी था , उसकी सुंदर पत्नी तथा दो प्यारे प्यारे बच्चे थे। अब कोई भी नहीं था।रोहिणी के बच्चो चुन्नू - मुन्नू को देखकर

उसे अपने बच्चों की याद आ गई।उन्हें खेलता देख उस ऐसा लगा कि उसके अपने बच्चे खेल रहे है।

उत्तर 7. मिठाई वाले से पहली बार किसी ने उससे उसके परिवार के बारे में पूछा था। परिवार की बात पर वह अति भावुक हो गया। उसने रोहिणी को बताया कि उसका भरा पूरा खुशहाल परिवार था परन्तु अब कोई भी नहीं था। पास ही रोहिणी के बच्चे चुन्नू- मुन्नू खेल रहे थे जिन्हें देखकर वह और भावुक हो गया। उन्हें हंसते खेलते देखकर उसे अपने बच्चो की याद आ गई इसलिए उसने कहा कि इस बार वह पैसे न लेगा।

उत्तर 8. यह कहानी बहुत वर्षों पहले की है। उस जमाने में औरतें चिक के पीछे से बात करती थी। आज समय बदल गया है। स्त्रियां पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती है। औरतों को सभी अधिकार प्राप्त हैं। शहरों में तो चिक से बात करने की प्रथा अब नहीं है परन्तु गावों में या कुछ रूढ़िवादी लोग अब भी इस प्रथा में विश्वास रखते हैं। औरतें आज जागरूक हो गई हैं तथा इन प्रथाओं से वे मुक्त होना चाहती है । आज गावों में भी औरतों को अपने हक के लिए लड़ना आता है।

मेरे विचार से यह प्रथा बिल्कुल गलत प्रथा है। यदि यह प्रथा अब भी कहीं लागू है तो इस प्रथा का बहिष्कार करना चाहिए।

<u>कहानी से आगे</u>

उत्तर 1. मिठाई वाले ने अपनी व्यथा तो सुनाई परन्तु उसने अपने परिवार का उसके साथ अब न होने का कारण स्पष्ट नहीं किया। इस पर हम

अनुमान ही लगा सकते है कि उसके परिवार के साथ कोई दुर्घटना घटी होगी। अपनी सोच के आधार पर निम्नलिखित कहानी बनाई जा सकती है।

एक दिन मिठाई वाले की पत्नी ने उससे कहा कि पास ही के गांव में मेला लगा है। बच्चे उस मेले में जाने की ज़िद कर रहे है। उसने मिठाई वाले को मेले में जाने के लिए कहा। मिठाई वाला मान गया। दूसरे दिन सवेरे ही वे सभी तैयार होकर मेले में जाने के लिए घर से निकले। सभी बड़े खुश थे। वे मेले में पहुंचे तथा मेले का आनंद लेने लगे। बच्चो ने झूले में बैठकर झूले का आनंद लिया। नृत्य देखा। जब घूमते घूमते थक गए तो बच्चो को भूख लग गई। मिठाई वाले की पत्नी ने उससे कहा कि वह सभी के लिए कुछ खाने – पीने का सामान ले आए, मिठाई वाला समान लेने चला गया। तब अचानक ही भगदड़ मच गई। एक पागल बैल मेले में घुस आया था।वह बेतहाशा इधर उधर भाग रहा था। कई लोग उसके पैरों तले रोंधे गए। मिठाई वाले की पत्नी तथा बच्चे भी यहां वहां भागने लगे। पागल बैल किसी के हाथ न आ रहा था। मिठाई वाले की पत्नी तथा उसके बच्चो को भी उसने अपने पैरों से कुचल दिया।। जब मिठाई वाला समान लेकर आया तब तक सब खत्म हो चुका था। इस प्रकार मिठाई वाले ने अपने परिवार को खो दिया।

उत्तर2. हाट मेले में सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली चीजें होती है , मेले में लगे झूले, तरह तरह की खाने कि चीजे, रंग बिरंगी मिठाईयां।मनोरंजन के लिए जादू का खेल दिखाया जाता है। नृत्य का

आयोजन किया जाता है। पहलवान अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए कुश्ती स्पर्धा का आयोजन करते है। इन सभी की व्यवस्था करने में बड़ी मेहनत लगती है। इनका आयोजन करने वाले चेहरे है मिठाई वाला , बांसुरी वाला, हलवाई, झूले चलाने वाले , फेरीवाले , कुश्ती लड़ने वाले पहलवान आदि। नृत्य का प्रदर्शन करने के लिए भिन्न भिन्न स्थानों से आए हुए कलाकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए बड़ी मेहनत करते है।

उत्तर 3. कहानियों की मनोरंजन वाली तथा ज्ञानवर्धक पुस्तकें समय समय पर प्रकाशित की जाती है। कुछ लेखकों तथा कवियों के नाम यहां दिए जा रहे है छात्र उन पुस्तकों का उपयोग कर सकते है।

- लेखकों में मुंशी प्रेमचंद की पुस्तकें ज्ञानवर्धन तथा मनोरंजक होती है। उनके द्वारा लिखी गई कुछ पुस्तकें है – गोदान, निर्मला

  कवियों में भी मुंशी प्रेमचंद की कविताएं अति रोचक है। अन्य कवि है – हरिवंश राय बच्चन, बिहारी जी, बाजपेयी जी।

<u>अनुमान और कल्पना</u>

उत्तर 1. अक्सर गलियों में फेरी वाले जो नियमित रूप से गलियों में आते है तो कई बार बातों बातों में उनके घर की बात निकल जाती है और उनके बारे जानने लगते हैं।इसके आगे के प्रश्न का भाग छात्र अपने अनुभव से कर सकते है।

उत्तर 2. पहले जमाने में लोग हाट से फेरी वालों से चीजे लिया करते थे।फेरी वाले लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मधुर तथा सुरीले स्वर में गीत गाया करते थे। कोई डुग डुगी बजाकर अपना सामान बेचता तो कोई नाच दिखाकर। अब जमाना बदल चुका है। फेरी वालों का प्रचलन कम हो चुका है। लोग स्वयं बाज़ार जाकर समान खरीदते हैं। बाज़ार तो छोड़िए , लोगो ने घर बैठकर ऑनलाइन सामान मंगवाना शुरू कर दिया हैं। इस प्रकार समय के साथ अविश्वनीय बदलाव आ गए हैं।

उत्तर3. निश्चित ही वक्त के साथ फेरी के स्वर कम हुए हैं क्योंकि जमाना बदल चुका है, लोग देखकर परखकर खरीदारी करते है यहां तक कि आज कल घर बैठे सभी कुछ मिल जाता है। कंप्यूटर युग आ गया है। ऑनलाइन शॉपिंग एक फैशन बन गया है। पहले फेरी वालों में स्पर्धा होती थी , फिर दुकानदारों में होड़ लग गई अपनी चीज को सजाकर बेचने की। अब वक्त और आगे निकल चुका है । ऑनलाइन स्पर्धा की शुरुवात हो गई है।अपनी अपनी वेबसाइट बनाकर, उत्सव आने पर 80 प्रतिशत डिस्काउंट तक दिया जाता है।ऐसे में फेरी वालों का तो कोई नाम तक नहीं लेता। यही कारण है कि फेरी के स्वर कम हुए है।

<u>भाषा की बात</u>

उत्तर 1. (क) मिठाईवाला में 'वाला' से पहले मिठाई शब्द एक संज्ञा है।

बोलनेवाली गुड़िया में वाली से पहले शब्द 'बोलनेवाली' से ' बोलना' एक क्रिया है।

(ख) मिठाई वाले में मिठाई शब्द तथा बोलने वाली गुड़िया में बोलनेवाली इन शब्दों की विशेषता बता रहे हैं।

उत्तर 2– छात्र कक्षा में सामूहिक बातचीत द्वारा इस प्रश्न का समाधान करें।

उत्तर 3- लगता है पार्क में खेलने चले गए।

अरे , भाई मुरली का क्या दाम है?

दादी चुन्नू – मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। कमरे में बिठाइए।